भारतीय संस्कृतिमें ''ईद-उल-फ़ित्र'' भाईचारा और सद्भावना का प्रतीक

रमज़ान के पूरे महीने में मुसलमान रोज़े रखकर अर्थात भूखे-प्यासे रहकर पूरा महीना अल्लाह की इबादत में गुज़ार देते हैं।इसी खुशी में ईद का त्यौहारइसलामी कैलंडर के दसवें महीने "शव्वाल" के पहले दिन चाँद दिखने पर मनाया जाता है।यह ख़ुशी ख़ासतौर से इसलिए भी है कि रमज़ान का महीना जो एक तरह से परीक्षा का महीना है ।रमज़ान के इस मुबारक महीने में दुनिया भर के मुसलमान पूरी श्रद्धा,ईमानदारी व लगन से अल्लाह के आदेशों को मानते हैं और धर्म के मार्ग पर चलते हैं। इस कड़ी आजमाइश के बाद का उपहार ईद है। इस दिन अल्लाह की रहमत पूरे उत्साह पर होती है तथा अपना आदेश पूरा करने वाले बंदों को रहमतों की बारिश से भिगो देती है। अल्लाह पाक रमज़ान की इबादतों के बदले अपने नेक बंदों को बख्शे जाने का ऐलान फ़रमा देते हैं। ईद की नमाज़ के जरिए बंदे ख़ुदा का शुक्र अदा करते हैं कि उसने ही हमें रमज़ान का पवित्र महीना प्रदान किया, फिर उसमें इबादतें करने की सफलता दी और इसके बाद ईद का उपहार दिया। तब बंदा अपने माबूद (पूज्य) के दरबार में पहुंचकर उसका शुक्र अदा करता है।
पहली बार ईद उल-फ़ितर पैगम्बर मुहम्मद ने सन 624 ईसवी में जंग-ए-बदर के बाद मनाया था।
उपवास का उद्देश्य या दर्शन यह भी है कि अमीर और गरीब के बीच अंतर मिट जाए। अमीरों को भूख और प्यास कीपीड़ाका अहसास हो जाए।
"ईद-उल-फ़ित्र""दो शब्दों"ईद" और "फ़ित्र" का मिश्रण है। असल में 'ईद' के साथ 'फ़ित्र' को जोड़े जाने का एक ख़ास मक़सद है। रमज़ान के महीने में रोज़ेदारों पर लगाए गए प्रतिबंध को समाप्त करने की घोषणा। साथ ही छोटे-बड़े, अमीर-ग़रीब सबकी ईद हो जाना। 'फ़ित्र' शब्दके अर्थ चीरने औरचाक करने के हैं और ईद-उल-फ़ित्र उन तमाम प्रतिबंधों को भी समाप्त कर देती हैलेकिन तमाम प्रतिबंधों को समाप्त कर देने का अर्थ यह नहीं है कि जिन बुराइयों पर रोक लगा दी गई थी उन पर से प्रतिबंध हटा दी गई।केवल रमज़ान के महीने में दिन में खाने-पीने पर जो रोक लगाई जाती है उस पर से पाबंदी हटा दी जाती है।लेकिन रमज़ान के महीने में अच्छाई के रास्ते पर चलने की जो आदत डाल दी गई थी उसे शेष ग्यारह महीने तक जारी रखना आवश्यक है।
इसी 'फ़ित्र' से 'फ़ित्रा' बना है। फ़ित्रा अर्थात् वह राशि जो खाते-पीतेऔरसुखी संपन्न घरानों के लोग आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों को देते हैं। ईद की नमाज़ से पहले फ़ित्रा अदा करना जरूरी होता है। इस तरह अमीर के साथ ग़रीब की ईद भी मन जाती है।वास्तव में ईद से पहले यानी रमजान में ज़कातअर्थात्इस्लामिक टैक्स अदा करने की परंपरा है।ज़कात की राशि भी ग़रीबों, विधवाओं व अनाथों को दी जाती है। इसके साथ फ़ित्रे की रक़म भी उन्हीं का हिस्सा है। इन सबके पीछे सोच यही है कि ईद के दिन कोई ख़ाली हाथ न रहे और ऐसा न हो कि समृद्ध और धनवान लोगों ने रंगारंग औरतड़क-भड़क के साथ त्योहार मना लिया और ग़रीब-गुरबा मुंह देखते रहगए।क्योंकि यह खुशी का दिन हैऔर खुशी के दिन को जब तक हर व्यक्ति न मनाए तब तक सही मायने में खुशी नहीं होती।

धार्मिक रूप से भी रमज़ान के महीने का महत्व बहुत अधिक है। सही अर्थों में यह महीना मनुष्य को आदमी से महात्मा बनाने का महीना है। पैगम्बर मोहम्मद (स.अ.व.) ने कहा कि " यह रमजान का महीना है जो कोई इस के दिनों में रोज़े रखे और इसकी रातों में से कुछ हिस्सा उपासना करे , अपने आप को हराम से रोके रखे और अपनी भाषा पर नियंत्रण रखे, तो वह व्यक्ति पापों से ऐसे पवित्र हो जाएगा जैसे वह माँ की पेट से आया था। "दूसरी हदीस में है कि" जब रोज़ा

रखो तो अपनी खुद की भाषा पर नियंत्रण रखो , परायी औरतों के सामने अपनी आँखें नीची रखो। आपस में झगड़ा न करो। ईर्ष्या मत करो, एक दूसरे की बुराई न करो, एक दूसरे पर शक न करो, एक दूसरे को झूठा मत कहो , एक दूसरे का विरोध न करो, क्रोध में मत आओ , गाली मत दो, भगवान के स्मरण से लापरवाही न बरतो , प्रार्थना से उपेक्षा न करो , सामान्य रूप से चुप रहो। विवेक से काम लो , धैर्य और दृढ़ता से रहो, सच बोलो, बुरे लोगों से दूर रहो, नाच गाने से दूर रहो, धोखे, मक्कारी, मिलावट से पूरी तरह परहेज़ करो।ये सभी उपदेश दैवी संपदा के लक्षण है।
भगवन श्री कृष्ण ने भी गीता के अध्याय 16 के पहले , दुसरे और तीसरे श्लोकों में दैवी संपदा को लेकर उत्पन्न हुए पुरुष के लक्षण का उल्लेख करते अर्जुन से इन्हीं बातों को कहा है।वह कहते हैं "भय का सर्वथा अभाव , अंतःकरण की पूर्ण निर्मलता , तत्वज्ञान के लिए ध्यानयोग में निरन्तर दृढ़ इस्थिति और सात्विक दान ,इन्द्रियों का दमन , भगवान, देवता, गुरुजनो की पूजा तथा अग्निहोत्र आदि उत्तम कर्मों का आचरण, एवं वेद-शास्त्रों का पठन-पाठन तथा भगवान के नाम और गुणों का कीर्तन , स्वधर्म पालन के लिए कष्ट सहन और शारीर तथा इंद्रियों के सहित अंतःकरण की सरलता,मन,वाणी और शारीर से किसी प्रकार भी किसी को कष्ट न देना ,यथार्थ और प्रिय भाषण, अपना अपकार करने वाले पर भी क्रोधित न होना , कर्मों में करता पालन के अभिमान का त्याग , अंतःकरण की उपरति अर्थात चित्त की चञ्चलता का अभाव , किसी की भी निन्दा न करना ,सब भूतप्राणियों में हेतु रहित दया ,इंद्रियों पर नियंत्रण रखना , कोमलता,लोक और शास्त्रों से विरुद्ध आचरण में लज्जा और ब्यर्थ चेष्टाओं का आभाव एवं किसी में भी शत्रु भाव का न होना और अपने में पूज्यता के अभिमान का अभाव, दैवी संपदा को लेकर उत्पन्न हुए पुरुष के लक्षण हैं।पैगंबर मोहम्मद के उपदवशों और गीता के इन उपदवशों में कितना समानता है इस पर ध्यान देने की जरूरत है।
एक और हदीस में आया है कि झूठ, चुगली, झूठी शपथ और बुरी नजर से रोज़ा अवैध हो जाता है।
उपवास के दिनों में हर तरह की बुराइयों पर एक महीने तक प्रतिबंध लगाकर सभी को शेष ग्यारह महीने तक बुराइयों से दूर और अच्छाइयों को अपनाने के लिए अभ्यास कराया जाता है। कुरान में इरशाद है कि " ऐ ईमान वालों उपवास तुम्हारे लिए ऐसे ही फर्ज किए गए हैं जैसे पिछली उम्मतों पर फर्ज थे ताकि तुमधर्म निष्ठाइख़तियार करोअर्थात् उपवास का लक्ष्यधर्मनिष्ठाहै। भगवान कृष्ण ने गीता के अध्याय 18 के 66 वें श्लोक में कहा है कि "सम्पूर्ण धर्मों को अर्थात सम्पूर्ण कर्तब्य कर्मों को मुझमे त्याग कर, तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान ,सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आजा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा"।अतः निरंतर धर्मनिष्ठा के लिए रोज़ा ज़रूरी है और निरंतर धर्मनिष्ठा के द्वारा ही मनुष्य सर्वशक्तिमान ईश्वर में खुद को एकीकृत कर सकता है जिससे मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होसकता है। हदीस और गीता के शलोकों के तुलनात्मक अध्ययन से मालूम होता है कि गीता और हदीस एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं बल्कि एक दूसरे की पूरक हैं।
जहां तक 'ईद-उल-फ़ित्र'' के सामाजिक सरोकार का सवाल है तो ईद आपसी मिलन और भाई-चारे का भी त्यौहार है। यह त्यौहार भारत की बहुआयामी संस्कृति का प्रतीक है। इस त्यौहार पर भारत के सभी समुदायों के लोग मिलकर खुशी मनाते हैं। ईद का त्यौहार सभी के लिए खुशियाँ लेकर आता है। यह त्यौहार दया , परोपकार, उदारता, भाई-चारा आदि मानवीय भावनाओं से युक्त होता है।

ईद खुशियों से भरी कुदरत की वो सौग़ात है , जिसे हर कोई महसूस करता है।हालांकि इस त्यौहार को सिर्फ मुसलमानों का त्योहार माना जाता है लेकिन सच यह है कि हजारों हिंदू भी उपवास रखते हैं और अपने अपने तरीके से पूजा करते

हैं और भारत के सभी धर्मों के लोग ईद की खुशियों में शरीक होते हैं और बढ़ चढ़ कर ईद का त्योहार मनाते हैं इसलिए यह कहना सही नहीं है कि ईद सिर्फ मुसलमानों का त्योहार है बल्कि सही मायने में ईद भारत का राष्ट्रीय त्योहार है। ईद से जुड़ा एक पहलू ये भीउल्लेखनीय है, वह यह कि इस्लामिक नज़रिये से देखा जाए तो एक दूसरे से गले मिलने की परंपरा नहीं है, बल्कि मुस्लिम तौर तरीकों के मुताबिक एक दूसरे से हाथ मिलाया जाता है , जिसे मुसाफ़ेहा कहा जाता है। अब सवाल ये है कि ईद पर एक दूसरे के गले लगने की परंपरा कहां से आई है? इसका सीधा सा जवाब है कि ईद की खुशी में ये भारतीय संस्कृति का ऐसा संगम है , मुसलमानों के त्यौहारों के तौर-तरीके और हिंदुओं के त्यौहारों के तौर-तरीके आपस में ऐसे घुल मिल गए हैं कि उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है ।अर्थात त्यौहार किसी भी धर्म के मानने लोगों के क्यों न हों , उनमें हमारी भारतीय संस्कृति की अपनी अमिट छाप शामिल रहती है। उलेमा हज़रात का भी ऐसा ही मानना है कि जिस तरह हिन्दुस्तान में होली के मौके पर लोग गले मिलते हैं और भाईचारे का पैग़ाम देते हैं , इसी तरह ईद पर भी एक-दूसरे को गले लगकर गिले-शिकवे भुलाने और भाईचारा कायम करने की परंपरा हिन्दुस्तान की मिट्टी की ही सौग़ात है । इस्लाम अरब देश से आया जरूर है लेकिन उसकी आत्मा भारतीय है। कुरआन शरीफ ने इस्लाम धर्म को पेश किया लेकिन यह कोई अलग धर्म नहीं है। वास्तव में यह सनातन धर्म का ही परिमार्जित रूप है। इसलिए धर्म के नाम पर नफरत फैलाना धर्म के खिलाफ है। धर्म आपस में बैर रखना नहीं बल्कि आपस प्यार करना सिखाता है।

सभी भारतीय त्यौहार एक ही सन्देश देते हैं , भाईचारे का, सद्भावना का, त्याग का, सौहार्द्र और शान्ति का। कौन सा धर्म है, जो अशांति और अलगाव की शिक्षा देता है ? कौन सा धर्म है जो अधर्म के रास्ते परचलने का शिक्षा देता है?कोई भी धर्म नहीं।सभी धर्म सद्भावना का सन्देश देते हैं । फिररमजान के इतने पवित्र और कठिन दिनचर्या का पालन करने के बाद आने वाली ईद तो सचमुच केवल खुशियों और मोहब्बतों का ही पैगाम ला सकती है।

प्रोफेसर शेख अकील अहमद
उर्दूविभाग, सत्यवती कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
पता: 262-डी, शिप्रा सनसिटी
इंदिरापुरम, गाजियाबाद-201014
मोबाइल नंबर: 9911796525